राजिया के सोरठे

(सरल अर्थ सहित)

सम्पादक

मारवाड़ राज्यका इतिहास, भारतीय नरेश, राठोड़ राजवंश
वीर दुर्गादास राठोड़, भक्त मीरांबाई का जीवन और काव्य,
महाराजा सर प्रताप, राजस्थान के छत्तीस राजवंश,
राजपूत कौन हैं, क्या राजपूत अनार्य हैं, मारवाड़
के रीतिरस्म आदि पुस्तकों के रचयिता

सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता

श्रीजगदीशसिंहजी गहलोत एम. आर. ए. एस

गवर्नमेन्ट सेक्रेटेरियट (महकमा खास)

राज्य मारवाड़, जोधपुर

पुस्तक मिलने का पता

हिन्दी साहित्य मन्दिर,

घंटाघर, जोधपुर

...री वार ४००० | जुलाई सन् १६३४ ई० मुद्रक—शान्ति प्रेस, आगरा | मूल्य (≡)॥ साढ़े तीन आना

पुस्तक मंगाने वालों के लिए ज़रूरी सूचनाएँ

१—उधार देने, घर पर देखने देने और बिकी हुई पुस्तकें वापिस लेनेका नियम नहीं है। पुस्तकें नकद दाम या वी० पी० से भेजी जायँगी।

२—पुस्तकों का आर्डर देते समय ग्राहकों को अपना नाम, गाँव डाकखाना और जिला बहुत साफ़ साफ़ हिन्दी या अंग्रेज़ी में लिखना चाहिए।

३—एक रुपये से कम की वी० पी० नहीं भेजी जाती। १) रु० से कम की पुस्तकें मँगाने वालों को उतने ही मूल्य के डाक के टिकट, महसूल सहित, रजिस्ट्री या बन्द लिफाफे में भेजने चाहिए।

४—किसी वी० पी० में हिसाब सम्बन्धी या किसी तरह की कोई भूल जान पड़े तो ग्राहक उसे लौटावें नहीं, वी० पी० छुड़वा कर हमें लिख भेजें। भूल तुरन्त ठीक करदी जावेगी।

५—जो ग्राहक आर्डर के मुताबिक पुस्तकें मँगाकर वी० पी० लेने से इन्कार करेंगे उनसे कुल ख़र्चा लौटाने का लिया जायगा।

६—कभी कभी ग्राहक जितनी पुस्तकें मँगाते हैं, वे स्टाक में तैयार न होने पर जितनी पुस्तकें मौजूद होती हैं वे भेज दी जाती हैं, बाकी पुस्तकों केलिए दुबारा आर्डर (आज्ञापत्र) आने पर, स्टाक में तैयार होती हैं तो भेज दी जाती हैं। परन्तु प्रत्येक आर्डर में पुस्तकों का नाम खुलासा लिखना चाहिए। बैरंग पत्र नहीं लिए जावेंगे।

७—भारतवर्ष के बाहर विदेश में वी० पी० नहीं जाती, अतः वहाँ के सज्जन आर्डर देते समय मूल्य तथा डाकख़र्च (पोस्टेज) आगाउ भेजने की कृपा करें।

८—बुकसेलरों को उचित कमीशन दिया जाता है। सूचीपत्र मुफ़्त भेजा जाता है।

९—पुस्तकें मँगाने के सिवाय ग्राहक महाशय जोधपुर से सम्बन्ध रखने वाली कोई सेवा या कोई वस्तु लेना चाहेंगे, तो उसका प्रबन्ध भी कर दिया जायगा।

मैनेजर हिन्दी साहित्य मन्दिर, जोधपुर।

रवाड़ के सैकड़ों काव्यों में "राजिया के सोरठे" भी अपना एक अच्छा स्थान रखते हैं। सोरठों की भाषा सरल रोचक और उपदेशप्रद होने के कारण राजपूताने के निवासी प्रायः इन सोरठों को बोलते देखे जाते हैं। शायद ही कोई ऐसा मनुष्य हो जिसे राजिया के दो चार सोरठे याद न हों। राजाओं और सरदारों की सभा में राजिया के सोरठे मौक़े ब-मौक़े सुने जाते हैं। साधारण लोग तो इन्हें सांसारिक व्यवहार में अच्छी तरह नित्य प्रयोग करते हैं। वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स के भूतपूर्व ब्रिटिश रेजिडेण्ट (राजदूत) कर्नल पाउलेट साहब इन सोरठों पर इतने मुग्ध थे कि उन्होंने बड़ी मेहनत से जितने भी सोरठे मिल सके उनका संग्रह कर अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था। उक्त रेजिडेंट साहब इन सोरठों की तारीफ में कहा करते थे कि —"मारवाड़ी भाषा के साहित्य में राजिया के सोरठे अमूल्य वस्तु हैं।" The couplets of Rajia are a rare thing in the Marwari literature.

राजिया रावणा जाति में उत्पन्न हुआ था। इनका जन्म वि० सं० १८२५ (ई० सन् १७६६) के आस-पास मारवाड़ राज्य के कुचामण ठिकाने के जूसरी नामक गांव में हुआ था।

यह जूसरी गांव मकराणा रेल्वे स्टेशन से पूर्व की ओर दो मील पर अब भी है। इनका नाम राजाराम बतलाया जाता है। लोग इन्हें "राजिया" नाम से पुकारा करते थे। अखिल भारतवर्षीय रावणा रजपूत महासभा अजमेर का मत है कि "राजिया के सोरठे" राजारामजी चौहान के बनाये हुए हैं। परन्तु चारण लोग कहते हैं कि ये सोरठे राजिया कृत नहीं हैं। उनका कहना है कि शेखावाटी (जयपुर) के ढाणी नामक गांव के खिड़िया चारण कृपाराम बारहट नामक कवि ने इन सोरठों की रचना की है। वे कहते हैं कि बारहट कृपाराम के यहाँ राजिया नामक दरोगा (रावणा) नौकर था। कृपाराम एक समय (सं० १८५२ वि० में) बहुत बीमार हुए, राजिया ने उनकी सच्चे मन से सेवा की। वयोवृद्ध कृपाराम बहुत ही प्रसन्न हुए। उन्होंने अच्छे होने पर राजिया से कहा कि—"इस सेवा के बदले मैं तुझे अमर कर दूँगा"। बस इसी कारण कृपाराम ने राजिया को सम्बोधन करते हुए सैकड़ों सोरठे बनाये। कहते हैं कि कृपाराम ने लगभग ५०० सोरठे बनाए थे किन्तु अब सारे नहीं मिलते।

यदि यह बात सत्य हो तो वास्तव में कृपाराम ने राजिया के नाम को संसार में अमर कर दिया और यदि "रावणा रजपूत महासभा" का दावा सत्य हो तो भी यों कहा जा सकता है कि राजाराम ने अपना नाम स्वयं साहित्याकाश में एक चमकती हुई लेखनी से लिख दिया। सोरठों का भाव, उपदेश, अलंकार, उपमा, रस इत्यादि का आस्वादन तो काव्य मर्मज्ञ ही कर सकते हैं, परन्तु भाषा इनकी इतनी सरल और सुगम है कि सर्वसाधारण भी इनसे बहुत कुछ आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। राजिया के सोरठे के विषय में जोधपुर

नरेश महाराजा मानसिंहजी (सं० १८६०-१९०० वि०) ने जो कुछ कहा है वह अक्षरशः सत्य है। वे कहते हैं:—

सोने री साजाँह, नग कण सूँ जड़िया जकै।
कीनो कविराजाँह, राजा मालम राजिया॥

अर्थात्—"मोतियों से जड़े हुए सोने के जेवरों की तरह, हे राजिया! यह तेरे सोरठे हैं। इनके प्रताप से ही कवियों (चारण, भाट आदि) ने तुझे रईसों तक प्रसिद्ध कर दिया है।" वास्तव में राजिया के सोरठों ने उसे राजा महाराजाओं तक ही नहीं बल्कि इससे भी कहीं ज्यादा प्रसिद्ध कर दिया है।

सोरठे राजाराम ने बनाये हों या कृपाराम ने वे तो राजाराम (राजिया) की कीर्ति को अमर कर रहे हैं। कृपाराम के नाम तक को लोग नहीं जानते। यह तो ढूंढ खोज करने वालों का काम है—सर्वसाधारण तो उसे राजिया का ही काव्य समझते हैं। सोरठों की भाषा डिंगल, मारवाड़ी, संस्कृत और प्राकृत के बिगड़े शब्दों में है—किन्तु फिर भी सहज ही में समझ में आने योग्य हैं।

राजस्थानी चारण, भाट, सेवग आदि के काव्य प्रायः डिंगल भाषा में ही होते हैं। यह भाषा एक प्रकार की बिगड़ी हुई भाषा है। इसमें भारत की प्रायः सभी भाषाओं के शब्द बिगड़े हुए रूप में पाये जाते हैं। ट ठ ड ढ ण और ल आदि अक्षरों का इसमें बाहुल्य होता है तथा "स" कार का उच्चारण "ह" होता है। गुजराती, मराठी, अर्बी, फार्सी, सिन्धी, मागधी और ब्रजभाषा आदि कई भाषाओं के अनेक शब्द इसमें इस प्रकार आये हैं कि उनका असली रूप पहचान लेना तक कठिन हो गया है। जैसे संस्कृत भाषा का युधिष्ठिर शब्द डिंगल भाषा में

"जुजठल" बन गया। ऐसे ही श्रीहर्ष—सीहा, सीहड़ हो गया? कितना अपभ्रंश हुआ!! जोधपुर के न्यायाधीश महामहोपाध्याय कविराजा मुरारदान जी ने "डिंगल" का अर्थ मिट्टी का डगला (ढेला) या अनघड़ पत्थर किया है। यह अर्थ उपयुक्त भी है। क्योंकि डिंगल भाषा असंस्कृत भाषा है सुधरी हुई नहीं बल्कि बिगड़ी हुई एक भाषा है। वैसे तो अर्बी और फार्सी के शब्द डिंगल भाषा में बिगड़े रूप से आते हैं, परन्तु राजिया के काव्य में अर्बी और फार्सी शब्दों की अधिकता पाई जाती है। कारण कि उन दिनों भारत में अर्बी और फार्सी के शब्दों का प्रयोग बहुतायत से हो रहा था। अतएव कवि का काव्य अर्बी और फार्सी शब्दों से अछूता नहीं रहने पाया। हमने अर्बी फार्सी के सरल शब्दों को तो छोड़ दिया है, परन्तु जो कठिन शब्द आये उनका विवेचन यथास्थान कर दिया है। इस काव्य में अंग्रेजों का कोई शब्द नहीं आया है। यद्यपि उस समय अंग्रेजी भाषा भारत में प्रवेश कर चुकी थी तथापि उसका प्रचार विशेष नहीं था। इन दिनों के काव्यों में अंग्रेजी के शब्द लोग काम में लेने लगे हैं। हम मारवाड़ी भाषा के काव्य में ही अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग का उदाहरण यहाँ पेश करते है:—

"नहीं टेम[१] नहिं तार है, नहीं बत्ती में तेल।
आ चाले मन रे मते, मारवाड़ री रेल॥"

× × ×

पेलाँ तो पख देखतां, न्याव तणो निरधार।
पाइँट[२] देखे पाधरो, स्वारथ हमें विचार॥

पहले दोहे में (१) टेम अंग्रेजी भाषा के Time टाइम शब्द का विकृत रूप है और दूसरे दोहे में (२) पाइँट अंग्रेजी के

Point पाइँट का संकेत कर रहा है। सारांश यह है कि एक मात्र अँग्रेजी को छोड़कर भारत में उस समय बोली जाने वाली सभी मुख्य मुख्य भाषाएँ जैसे संस्कृत, प्राकृत, अर्बी, फार्सी के शब्द सोरठों में आये हैं और उन सबमें प्रधानता कवि की मातृ-भाषा मारवाड़ी की है। अस्तु।

यद्यपि कहा जाता है कि राजिया के सोरठों की संख्या ५०० के लगभग है तथापि हमें बहुत प्रयत्न करने पर भी जितने प्राप्त हो सके आपकी सेवा में उपस्थित करते हैं। ५०० की संख्या पूर्ण होने तक हम इस चमत्कारी काव्य को प्रकाशित करने का लोभ रोक नहीं सके और इसीलिए जो कुछ भी हमें मिला, उसी को लेकर आपके सम्मुख उपस्थित करना आवश्यक समझा। हाँ! हम खोज में हैं, और ज्यों ज्यों हमें राजिया के सोरठे प्राप्त होते जाँयगे त्यों त्यों हम इस पुस्तक के नवीन नवीन संस्करणों में उन्हें प्रकाशित करते जावेंगे। यह सोरठे अमूल्य मणियों की तरह वयोवृद्ध पुरुषों के जिव्हाग्र पर बिखरे हुए हैं। इनमें से बहुत से सोरठों को सुनने का सौभाग्य मुझे भी मेरे पूज्य पिता श्रीकिशोरसिंह जी के मुखारविन्द से प्राप्त हुआ, जो आज ८६ वर्ष की अवस्था होने पर भी बड़ी रोचकता व स्मृति से बखानते हैं। मैं आशा करता हूँ कि प्रेमी पाठक इन सोरठों के रसों एवं भावों का आस्वादन कर मेरे इस प्रयत्न को सफल करेंगे।

इतिहास संशोधन विभाग
जोधपुर (राजपूताना)
ता० १८ जुलाई सन् १९२७ ई०

—कुँ० जगदीशसिंह गहलोत

ऊमर काव्य

मारवाड़ी भाषा का यह काव्य प्रत्येक काव्य-प्रेमी व सुधारकों के काम की चीज है। इसकी कविता सुन्दर, सरल और सरस है। इसमें सामाजिक कुरीतियों का एक निराले ही ढंग से चुटकियें लेते हुए कवि ने वर्णन किया है। निर्भीकता से कूट कूट कर इसमें जोश भर दिया गया है। यह काव्य निर्भीक व स्पष्टवादी कविवर ऊमरदान चारण का रचा हुआ है। जिनका नाम राजपूताने के राज रजवाड़ों में और राजदरबारों में छिपा नहीं है। कवि ने बड़ी सफलता के साथ हास्य, अद्भुत शान्त आदि रसों का स्रोत बहा दिया है। 'जोधारां री जस' में वीररस में लेखनी चलाई है तो 'वैराग्य वचन, धर्मकसौटी' में शान्तरस का प्रवाह, बहा दिया है। कलदार करामात, दासी द्वादसी तथा ओलम्बा में, व्यंगरूप में मर्म की बातें कह दी हैं। नीति की शिक्षा से तो पुस्तक भरी हुई है। इसी प्रकार "दयानन्द बन्दना, दयानन्द की दया, दयानन्द दर्शन, सन्त-असन्त सार, खोटा सन्तांरो खुलासो, छपनां री छोरा रोल आदि प्रकरण विशेष महत्वपूर्ण और जानने योग्य है।

यह तीसरी वार बड़े संशोधन, भूमिका, परिचय एवं सुधार के साथ छपा है। कवि का बहुत सा अप्रकाशित काव्य खोज करके इस में लगा दिया गया है। कठिन शब्दों के अर्थ प्रत्येक पृष्ठ पर और जहाँ जहाँ ऐतिहासिक या पौराणिक कथाओं में के प्रसिद्ध व्यक्तियों आदि के नाम आये हैं वहाँ उनका प्रमाणिक परिचय भी संक्षेप में दे दिया गया है। बड़ी योग्यता से इस बार इसका सम्पादन हुआ है। अक्षर बड़े और सुन्दर हैं। पृष्ठ ४५० दाम १।), सजिल्द १।।।) डाकखर्च अलग।

मिलने का पता—हिन्दी-साहित्य मंदिर, जोधपुर।

* ओ३म् *

राजिया के सोरठे

समझणहार सुजाण, नर औसर चूके नहीं।
औसर रो अवसाण[1], रहे घणा दिन राजिया ॥१॥

चतुर और समझदार मनुष्य अच्छे अवसर को हाथ से नहीं खोते, क्योंकि मौके पर किया हुआ अहसान, हे राजिया! बहुत दिनों तक बना रहता है।

जिणरो अनजल खाय, खल तिणरी खोटी करे।
जड़ा मूल सूँ जाय, राम न राखे राजिया ॥२॥

जिसका अन्न-जल खाकर जो कोई दुष्ट मनुष्य उसी का बुरा करता है। हे राजिया! ऐसे नमकहराम जड़ से मिट जाते हैं, उसे ईश्वर भी नहीं बचा सकता।

तज मन सारी घात, इकतारी राखे अधक।
वाँ मिनखा री बात, राम निभावे राजिया ॥३॥

जो कपट, छल, ईर्षा, द्वेष, काम, क्रोध आदि मनोविकार को छोड़ कर मेल मिलाप ऐक्य आदि रखते हैं, हे राजिया! उन मनुष्यों की बात परमात्मा अवश्य रखता है।

कुटल निपट नाकार, नीच कपट छोड़े नहीं।
उतम करै उपकार, रूठा तूठा राजिया ॥४॥

१—अर्बी शब्द अहसान का बिगड़ा हुआ रूप।

कुटिल और बिल्कुल निकम्मे मनुष्य कभी भी कपट नहीं छोड़ते, परन्तु हे राजिया ! भले आदमी नाराज़ होने पर भी सदा उपकार ही करते हैं।

सुख में प्रीत सवाय, दुख में मुख टालो दिये।
जो की कहसी, जाय राम कचेड़ी राजिया ॥५॥

जिसने सुख में तो अत्यन्त प्रेम दिखाया और दुख के समय मुँह छिपाया, अरे राजिया ! ऐसे लोग ईश्वर के दरबार में क्या जवाब देंगे ?

कीधोड़ा उपकार, नर कृतघण जाणे नहीं।
लानत[1] त्यारीं लार, रजी उड़ावो राजिया ॥६॥

कृतघ्नियों अर्थात् उपकार न मानने वालों के साथ जो उपकार किये जाते हैं, उन्हें वे नहीं मानते। ऐसे लानतियों (धिक्कारने योग्य मनुष्यों) के पीछे, हे राजिया ! धूल उड़ावो।

मुख ऊपर मिठियास, घट माँही खोटा घड़े।
इसड़ा सू इकलास[2], राखीजै नहिं राजिया ॥७॥

जो मुँह पर मीठी-मीठी बातें बनावें और मन में उसके प्रति बुरे भाव रखें, हे राजिया ! ऐसे मनुष्यों से स्नेह नहीं रखना चाहिये।

एहला जाय उपाय, आछोड़ी करणी अहर।
दुष्ट किणी ही दाय, राजी हुवे न राजिया ॥८॥

१—"लानत" शब्द अर्बी भाषा का है जिसका अर्थ है "धिक्कार"।

२—यह अर्बी शब्द "इखलास' का अपभ्रंश है।

दुष्टों के साथ किये उपाय (उपकार) और अच्छा व्यवहार भी व्यर्थ होता है, क्योंकि हे राजिया ! वे किसी भाँति भी संतुष्ट नहीं किये जा सकते ।

उद्यम करो अनेक, अथवा अनउद्यम रहो ।
होसो[1] नहचे हेक, राम करे सो राजिया ॥९॥

कितने ही प्रयत्न करो अथवा न करो, हे राजिया ! वही होगा जो परमात्मा करेगा ।

ढ़पवो वेद पुराण, सोरो इण संसार में ।
बातों तणा बिनाँण, रहस दुहेलो राजिया ॥१०॥

हे राजिया ! वेद, पुराणों का पढ़ना तो इस संसार में सुगम है, परन्तु बातों का रहस्य और रस जानना कठिन है

गुण सूँ तजै न गाँस, नीच हुवे डर सूँ नरम ।
मेल लहै खर माँस, राख पड़े जद राजिया ॥११॥

नीच मनुष्य स्वभाव से ईर्षा नहीं छोड़ता, परन्तु डरने पर नम्र हो जाता है जैसे गधे के मांस पर जब राख पड़ती है तभी वह हे राजिया ! मेल लेता है अर्थात् पानी में मिल कर गल जाता है ।

दुष्ट सहज समुदाय, गुण छोड़े अवगुण गहै ।
जोख चढो कुच जाय, रातो पीवे राजिया ॥१२॥

कवि कहता है कि हे राजिया ! दुष्टों का यह स्वभाव ही है कि वे गुणों को छोड़ने तथा अवगुणों को ग्रहण करने में बड़े

१— यह कवि के साम्प्रदायिक विचार हैं ।

ही प्रसन्न होते हैं, जैसे जोंक स्तनों पर लग कर .खून ही पीती है, दूध नहीं पीती !

कोई नर बेकार, बड़ करता कहता बलै।
राखै नहीं लगार, राम तणो डर राजिया ॥१३॥

अरे राजिया ! इस संसार में अनेक मनुष्य ऐसे हैं जो व्यर्थ की अपनी बड़ाइ और बढ़ बढ़ कर बोलते समय ईश्वर से भी नहीं डरते।

चूगली ही सूँ चून[1], और न गुण इण वास्तै।
खोस लियो वे खून[2], रिगल उठावे राजिया ॥१४॥

जिनमें कोई दूसरा गुण तो पाया नहीं जाता, इसलिए केवल चुगली से ही अरे राजिया ! ऐसे लोगों ने निरपराध लोगों की रोटी मसखरी करके छीन ली है।

आछो मान अमाव, मतहीणां केई मिनख।
पुटिया[3] को ज्यूं पाव, राखे ऊँचा राजिया ॥१५॥

अरे राजिया ! यदि ओछे मनुष्यों को कुछ इज्जत-पद मिल जावे तो वे घमण्ड में फूले नहीं समाते और पुटिया नामक पक्षी की तरह ऊँची ही टाँग रखते हैं।

गुण अवगुण जिण गांव सुणे न कोई सांभले।
उण नगरी बिच नाँव, रोही आछी राजिया ॥१६॥

१—"चून" आटे को कहते हैं। संस्कृत शब्द "चूर्ण" का अपभ्रंश है।
२—".खून" शब्द का अर्थ मारवाड़ी भाषा में "अपराध" है।
३—"पुटिया" एक पक्षी विशेष का नाम है; वह ऊपर पैर करके वृक्ष पर सोता है।

जिस गाँव में गुण और अवगुण को न तो कोई समझता हो और न सुनता ही हो, हे राजिया! ऐसी अंधेर नगरी में कभी मत आओ उससे तो ऊजड़ जंगल ही कहीं अच्छा है।

हुवै न बूझण हार, जाणे कुण कीमत जठै।
विण गाहक व्योपार, रुल्यो गिणीजे राजिया ॥१७॥

जहाँ कोई बात पूछने वाला ही न हो वहाँ कदर भी कौन जाने, क्योंकि हे राजिया! बिना ग्राहक के व्यापार अस्थायी गिना जाता है।

मूरख टोल तमाम, घसकां राले अत घणी।
गतराड़ो गुण ग्राम, रांडोल्या मझ राजिया ॥१८॥

मूर्खों का दल बहुत ज्यादा गप्पें मारा करता है। हे राजिया! नामर्दों में हिजड़ा ही सर्व गुण सम्पन्न गिना जाता है।

कारज सरे न कोय, बल प्राक्रम हिम्मत बिना।
हलकार्‌याँ की होय रंग्या स्यालां राजिया ॥१९॥

अरे राजिया! कोई भी काम बल, पराक्रम और साहस के बिना नहीं हो सकता। रंगे हुए गीदड़ों के ललकारने से क्या होता है।

मिले सिंह बन माय, किण मिरगा मृगपत कियो।
जोरावर अति जाय, रहे उरधगत[1] राजिया ॥२०॥

सिंह को किन मृगों ने अपना स्वामी अर्थात् मृगपति चुना था? बात यह है कि हे राजिया: जो बलवान होता है वह जहाँ जाता है वहीं बड़ा बन कर रहता है।

१—"ऊर्ध्व गति" का बिगड़ा हुआ रूप।

खल धूकल कर खाय, हाथल बल मोताहलाँ।
जो नाहर मर जाय, रज त्रण भखे न राजिया ॥२१॥

कवि कहता है-भले ही सिंह भूखा मर जावे परन्तु वह मिट्टी या घास कदापि नहीं खायगा। हे राजिया! वह तो अपने पुरुषार्थ द्वारा पंजों के बल से मोतियों वाले हाथियों को मार कर खाता है।

नभचर बिहँग निरास, बिन हीमत लाखाँ वहै।
बाज छत्र कर वास, रजपूती सूँ राजिया ॥२२॥

पुरुषार्थ हीन लाखों ही पक्षी नित्य आकाश में उड़ा करते हैं परन्तु बाज पक्षी तो हे राजिया! अपनी बीरता से ही तृप्त होकर जीवन व्यतीत करता है।

घेर सबल गजराज, केहर पल गजकाँ करै।
को सठ कर कम काज, रिगता ही रह राजिया ॥२३॥

सिंह मतवाले हाथी को घेर कर मार डालता है और उसके मांस को खाता है। इसलिये हे राजिया! वे मूर्ख किस काम के हैं जो कुछ करते धरते नहीं और सिर्फ देखा ही करते हैं! अर्थात् संसार में पुरुषार्थ ही प्रशंसा के योग्य है।

आछा जुध अणपार, धार खगाँ सनमुख धसी।
भोगी सो भरतार, रया जिके नर राजिया ॥२४॥

अनेक लड़ाइयों में जो वीर तलवार पकड़के लड़े हैं उन्हीं ने इस पृथ्वी को जीता है वे ही इस पथ्वी के स्वामी हैं। अरे राजिया! वे ही इस पृथ्वी पर टिक कर रहे हैं।

दाम न होय उदास, मुतलब गुण-गाहँक मिनख।
ओखद रो कड़वास, रोगी गिणे न राजिया ॥२५॥

हे राजियां ! जो मनुष्य तत्व और गुणों का ग्राहक होता है, वह अनादर से उदास नहीं होता जैसे रोगी मनुष्य दवा के कड़वे पन पर ध्यान नहीं देता।

गह भरियो गजराज, मह पर वहे आपह मते।
कूकरिया बेकाज, रुगड़ भुँसे किम राजिया ॥२६॥

मदवाला हाथी अपनी इच्छा से आप ही पृथ्वी पर घूमता फिरता है, परन्तु कुत्तियां बिना काम ही, हे राजया ! यों ही भोंका करती हैं।

असलो रो औलाद, खून करयां न करे खता।
बाहे बदब बाद, रोढ दुलातां राजिया ॥२७॥

अच्छे कुल में पैदा हुए मनुष्य के साथ अगर कोई व्यक्ति बुरा व्यवहार भी करे तो भी वह बुरा नहीं मानता, परन्तु हे राजिया दोगला—खच्चर व्यक्ति व्यर्थ ही दुलत्तियां झाड़ा करते है।

इस हा सूं अवदात, कहणो सोच विचार कर।
वे औसर री बात, रूड़ी लागे न राजिया ॥२८॥

इसलिए बात बहुत सोच विचार करके मुँह से निकालनी चाहिये, क्योंकि बे मौके की बात हे रजिया ! अच्छी नहीं लगती है।

विन मुतलब बिन भेद, कोई पटक्या राम का।
खोटो कहे निखेद, रामत करता राजिया ॥१९॥

हे राजिया ! कई राम मारे (दइ मारे) दुष्ट मनुष्य, बिना मतलब हंसी दिल्लगी में लोगों की बुराई कर देते हैं।

पल पल में कर प्यार, पल पल में पलटै परा।
ऐ मुतलब रा यार, रहै न छाना राजिया ॥३०॥

पल पल में तो प्रेम करें और पल पल में आखें बदलते रहें, हे राजिया ! ये मतलब के दोस्त हैं, यह बात अंत में अच्छी तरह प्रकट हो जाती है।

सार तथा अणसार, थेटू गल बँधियो थकौ।
बड़ा सरमचो भार, राल्यां सरै न राजिया ॥३१॥

हे राजिया ! अच्छा और बुरा जो भार परम्परा से गले में बंधा हुआ है उसको वे बड़े लोग लज्जा से निभाते हैं, दूर नहीं कर सकते।

पहली किया उपांव, दव दुसमण आमय दटै।
प्रचंड हुआ वस बाव, रोभा घाले राजिया ॥३२॥

कवि कहता है कि हे राजिया ! आग बैरी और रोग का पहले ही से प्रबन्ध करने से दबते हैं। जब प्रचंड होकर वायु के वश में हो जाते हैं तो फिर ये कष्ट ही देते हैं।

एक जतन सत एह, कूकर कुगंध कुमांणसां।
छेड़ न लीजे छेह, रैवण दीजै राजिया ॥३३॥

यही एक उत्तम उपाय है कि कुत्ते, दुर्गन्ध और दुष्ट मनुष्यों को कदापि न छेड़े, हे राजिया ! इन्हें दूर ही रखें।

नरा नखत परवांण, ज्याँ ऊभाँ संकै जगत।
भोजन तपै न भाण, रांवण मरतां राजिया ॥३४॥

भाग्यशाली लोग जहां खड़े होते हैं वहां लोग उनसे शंका खाते ही हैं। जैसे हे राजिया ! रावण के मरते ही सूर्य्य ने उसका भोजन पकाना छोड़ दिया।

हिम्मत किम्मत होय, बिन हिम्मत किम्मत नहीं।
करै न आदर कोय, रद कागद ज्यों राजिया ॥३५॥

साहस से ही मनुष्य का मूल्य जाना जाता है, जिसमें साहस नहीं उसकी संसार में कुछ भी क़दर नहीं; हे राजिया ! उसका कोई आदर नहीं करता, वह रद्दी कागज के समान है।

देखे नहीं कदास, नहचे कर कुनफो नफो।
गैल्यां रो इकलास, गैल मचावे राजिया ॥३६॥

जो कभी अपना नफा और नुकसान नहीं देखता, हे राजिया ! उसे लुच्चे लफंगों का मेल मिलाप मिट्टी में मिला देता है।

कूँड़ा कूड़ प्रकास, अण हूती मेले इसी।
उड़तो रहे अकास, रजी न लागे राजिया ॥३७॥

झूँठे मनुष्य, झूठ के फैलाने में, अनहोनी बात को ऐसी मिला देते हैं कि वह आसमान में उड़ती फिरती है, हे राजिया उसे रज (धूड़) भी नहीं लगती।

उपजावे अनुराग, कोयल मन हरखत करै ॥
कड़वा लागे काग, रसना रा गुण राजिया ॥३८॥

कोयल की मीठी वाणी के प्रति प्रेम उत्पन्न होने से मन को हर्ष होता है किन्तु कौआ उसकी वाणी के कारण बुरा लगता है, हे राजिया ! यह केवल वाणी का कारण है।

भली बुरी रो मोत, नह आणे मन में निखद।
निलजी सदा नचोत, रहे सयाणा राजिया ॥३९॥

अधम मनुष्य भले बुरे का डर अपने मन में बिलकुल नहीं रखता। हे राजिया ! वह निर्लज्ज बन कर सदा निशंक सोता रहता है।

ऐस[1] अमल[2] आराम, सुख उछाह भेला सयणा।
होका बिना हंगाम,[3] रँग[4] रो हुवे न राजिया॥४०॥

ऐशो आराम, अफीम वगैरः का नशा-पत्ता मित्र आदि के एकत्र होने का आनन्द उत्सव, हे राजिया ! एक हुक्के के बिना सब फीका हो जाता है।

कठण पड़े जद काम, हांम पकड़ गाड़ो रहे।
तो अलबत ही ताम, राम भले हुवे राजिया॥४१॥

कठिन समय आ पड़ने पर यदि धैर्य धारण करके दृढ़ बन जावे तो हे राजिया ! निश्चय ही ईश्वर उसकी सहायता करता है।

मद विद्या धनमान, ओछा से उकलें अवस।
आधणं रे उनमान, रहै के बिरला राजिया॥४२॥

मद, विद्या, धन और मान यदि ओछे पुरुषों को प्राप्त हो तो वे छलकने लगते हैं। इन्हें प्राप्त करके हे राजिया ! विरले ही यथास्थान रहते हैं।

१—अर्बी के "ऐश" शब्द का रूपान्तर। २—अफीम।
३—"हंगाम" फार्सी शब्द का अपभ्रँश जिसका अर्थ है धूम धड़क्का।
४—"रंग" फार्सी शब्द है, मारवाड़ी में मजे के लिये और शाबाशी के लिये प्रयोग होता है।

पय मीठा कर पाक, जो इमरत सींचीजिये।
उर करडाई आक, रंच न मूकै राजिया ॥४३॥

दूध में शक्कर डाल कर और उसे औटा कर, अथवा अमृत से भी यदि आक वृक्ष को सींचा जावे तो हे राजिया! वह अपना कड़वापन जरा भी नहीं छोड़ेगा।

तुरँत बिगाड़े ताह, परगुन स्वाद स्वरूप ने।
मित्रा ही पय माह, रिगल खटाई राजिया ॥४४॥

हे राजिया! मसखरी; पराये गुण, स्वाद, आनन्द और रूप को ठीक वैसे ही नष्ट कर देती है जैसे दूध और पानी की मित्रता को खटाई।

सब देखे संसार, निपट करे गाहक नज़र।
जाणे जाणण हार, रतनाँ पारख राजिया ॥४५॥

यों तो सब संसार ही देखता है, परन्तु जो जिस वस्तु का ग्राहक होता है वह उसे बहुत ध्यान से देखता है। रत्नों की परख हे राजिया! जानने वाले ही जानते हैं।

गुणी सपत सुर गाय, कियौ किसब मूरख कने।
जाणे रूनो जाल, रणरोही में राजिया ॥४६॥

हे राजिया! गवैये ने सातों स्वरों में गाकर मूर्ख के सामने अपना गुण प्रकट किया तो मानों सूने जंगल में जाकर वह रोया।

सांचौ मित्र सचेत, कह्यो काम न करै किसो।
हरि अरजन रे हेत, रथ कर हाँक्यों राजिया ॥४७॥

हे राजिया! सच्चा और योग्य मित्र कहो क्या काम नहीं

करता ? देखो श्रीकृष्ण ने अपने हाथों अपने मित्र अर्जुन का रथ हाँका था।

रोटो चरखो राम, अतरो मुतलब आपरो।
की डोकरियां काम, राज कथा सूँ राजिया ॥३८॥

रोटी; चरखा और राम (ईश्वर) से ही अपना मतलब रखना चाहिये। बूढियों को अरे राजिया! राज कथा (राजनैतिक बातें) से क्या प्रयोजन ?

जिण मारग जो जात, भूंडो हो अथवा भलो।
बिसनो सुं सौ बात, रह्या न जावे राजिया ॥४६॥

व्यसनी मनुष्य जिस रास्ते जाता है, वह भला हो चाहे बुरा, हे राजिया! वह उसे त्याग नहीं सकता—उसके बिना उससे रहा नहीं जाता।

अवनी रोग अनेक, ज्याँरौ विध कीधो जतन।
इण परकत री एक, रचो न ओखद राजिया ॥५०॥

संसार में अनेक प्रकार के रोग हैं और परमात्मा ने उनके निवारणार्थ उपाय भी रखे हैं परन्तु हे राजिया! आदत के लिए परमात्मा ने कोई दवा निर्माण नहीं की।

कारण कटक न कीध, सखरा चाहीजे सुपह।
लंक विकट गढ़ लोध, रीछाँ बाँदर राजिया ॥५१॥

फौज का ज्यादा होना कोई मुख्य कारण नहीं है, वास्तव में सिपाही अच्छे होने चाहिये। हे राजिया! लंका जैसा बांका गढ़ रीछ और बन्दरों ने ले लिया था।

आवे नहीं इलोल, बोलण चालण री विविध।
टीटोड्यांरा टोल, राजहंस रो राजिया ॥५२॥

टीटेहरी नामक पक्षी के दल को राजहंस के बोलने, चालने की युक्तियाँ नहीं आती हैं अर्थात् सभ्य पुरुष की रीति भाँति असभ्य पुरुषों में नहीं आ सकती।

दूध नीर मिल दोय, एक जिसी आकृत हुवे।
करै न न्यारो कोय, राजहंस बिन राजिया ॥५३॥

दूध और पानी मिलने पर दोनों समान रूप और समान गुण हो जाते हैं, उन्हें हे राजिया! राजहंस के बिना कोई भी अलग-अलग नहीं कर सकता।

मिणधर विष अणमाव, मोटा नह धारे मगज।
बिच्छू पूँछ बणाव, राखे सिर पर राजिया ॥५४॥

बड़े आदमी घमण्ड नहीं करते, जैसे साँप में बिच्छू से अधिक और तेज़ ज़हर होने पर भी उसे कुछ परवाह नहीं, किन्तु हे राजिया! अपनी पूँछ में बहुत थोड़ा ज़हर होने पर भी बिच्छू उसे बड़ी सावधानी से अपने सिर पर उठाये चलता है।

जग में दीठो जोय, हेक प्रगट बिवहार म्हें।
काम न मोटो कोय, रोटी मोटी राजिया ॥५५॥

हे राजिया! हम बहुत अनुभव के पश्चात् इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि संसार में कोई काम रोटी से बढ़ कर नहीं है।

विविध बणाय वणाव, जुगत घणी रचियो जगत।
कीधी बसत न काय, रूपया सिरखी राजिया ॥५६॥

हे राजिया ! बड़ी कारीगरी से इस जगत को ईश्वर ने बनाया है परन्तु उसमें रुपये जैसी कोई भी वस्तु नहीं बनाई अर्थात् पैसा सबसे बढ़ कर है ।

कहणी जाय निकाम, आछोणी आंणी उकत ।
दाँमा लोभी दाँम, रंजै रन बातां राजिया ॥५७॥

हे राजिया ! पैसे के लोभी के सामने अच्छी अच्छी उक्तियाँ पेश करके भी कहा हुआ व्यर्थ होता है, क्योंकि वह बातों से प्रसन्न नहीं होता—पैसे से होता है ।

हुंन्नर करो हज़ार, सैंणप चतुराई सहत ।
हेत कपट व्यवहार, रहै न छाना राजिया ॥५८॥

हज़ारों चालाकी, होशियारी और चतुराई के साथ छुपाने का प्रयत्न करो, परन्तु हे राजिया ! प्रेम और कपट व्यवहार छिप नहीं सकता ।

लह पूजा गुण लार, नह आडम्बर सूं निपट ।
सिव वन्दे संसार, राख लगायां राजिया ॥५९॥

पूजा गुणों की होती है, ढोंग की नहीं; शिवजी अपने शरीर पर राख लगाये रहते हैं तो भी हे राजिया ! संसार उन्हें पूजता है । अर्थात् "विद्वान् सर्वत्र पूज्यते" ।

लछमी करि हरि लार, हर ने दध दीधो ज़हर ।
आडम्बर अधिकार, राखे सारा राजिया ॥६०॥

समुद्र ने लक्ष्मी तो विष्णु को दी और विष शंकर को दिया । हे राजिया ! आडम्बर का ख़याल सब ही रखते हैं । अर्थात् "पाखंडे पूज्यते लोका" ।

सो मूरख संसार, कपट जिणाँ आगल करै।
हरि सह जाणणहार, रोम रोम रीं राजिया ॥६१॥

परमात्मा रोम रोम की प्रत्येक बातें जानता है परंतु हे राजिया! इतने पर भी जो छल छिद्र करते हैं वे पक्के मूर्ख हैं।

ओरूँ अकल उपाय, कर आछी भूँडी न कर।
जग सह चाल्यो जाय, रेला की ज्यूं राजिया॥६२॥

अब भी सोच-विचार ले, हमेशा भला कर, कभी किसी का बुरा न कर, क्योंकि हे राजिया! सारा संसार पानी के रेले के समान बहा चला जा रहा है।

ओसर पाय अनेक, भावै कर भूँडो भलो।
अन्त समै गत एक, राव रंक री राजिया ॥६३॥

समय-समय पर भलाई करो या बुराई करो अन्त समय तो अरे राजिया! धनी और कंगाल की एक ही गति है।

लूँक्यां करै न लोप, वन केहर भैला लसै।
करै न सबला कोप, रंका ऊपर राजिया ॥६४॥

जङ्गल में शेर भी और लोमड़ियाँ भी निवास करती हैं, परंतु सिंह लोमड़ियों को नष्ट नहीं करते। हे राजिया! जो बलवान होते हैं वे निर्बलों पर कोप नहीं करते।

पहली हुवै न पाव, कोड मणां जिणमें करै।
सुरतर तणो सुभाव, रंक न जाणे राजिया ॥६५॥

जो निरा कंगाल हो और उसके पास कुछ भी न हो उसे भी धनाढ्य बना देते हैं यह कल्पवृक्ष (अर्थात् दातार पुरुष) का स्वाभविक गुण है अरे राजिया! इसे हर कोई नहीं जानता।

पाल तणो परचार, कीधो आगम काम रो ।
बरसंतां घणबार, रुके न पाणी राजिया ॥६६॥

पानी आने के पहिले ही पाल बनाने का प्रबंध करना चाहिये क्योंकि हे राजिया ! मेह बरसते समय पानी भर जाने पर उसे नहीं रोका जा सकता ।

काम न आवे कोय, धरम करम लिखियाँ कियां ।
घालो हींग धसोय, रुका बिचाले राजिया ॥६७॥

केवल लिखकर रख छोड़ने से, बिना करे धर्म, कर्म कुछ भी काम नहीं आते । हे राजिया ! वे लिखे कागज़ तो रद्दी के मूल्य के होते हैं जो हींग की पुड़िया बाँधने मात्र के काम में आते हैं ।

भाड जोंख झख भेक, वारज में भेला बसे ।
इसकी भंवरो हेक, रस की जाणे राजिया ॥६८॥

वड़ा मेंढक, जोंक, मछली और मेंढकी कमल के पास ही रहते हैं । परन्तु हे राजिया ! कमल के गुणों का ग्राहक एक मात्र भँवरा ही होता है ।

मांने कर निज मीच, पर संपत देखे अपत ।
निपट दुखो ह्वे नींच, रीसां बलबल राजिया ॥६९॥

हे राजिया ! नीच लोग पराई सम्पति देखकर अपने दिल में अपनी मृत्यु के समान दुख पाते हैं क्योंकि वे लोग गुस्से से जल जल कर रात दिन दुखी होते रहते हैं ।

खूंद गधेड़ा खाय, पैलां री बाड़ी पड़ै ।
आ अणजुगती आय, रड़के चित में राजिया ॥७०॥

पराया माल, गधों के हाथ पड़ जाय तो उसको खाते और बिगाड़ते भी हैं। यह अयुक्त बात हे राजिया! चित्त में खटकती है।

नारी, दास, अनाथ, पण माथे चाढ्यां पछै।
है ऊपरलो हाथ, राल्यो न जावे राजिया ॥७१॥

स्त्री और सेवक दोनों ही अनाथ से होते हैं किन्तु हे राजिया! जब वे सिर पर चढ़ जाते हैं तो छाती के ऊपर का हाथ बन जाते हैं जो कठिनता से हट सकता है।

हिये मूढ जो होय, की संगत ज्यारी करै।
काला ऊपर कोय, रंग न लागे राजिया ॥७२॥

जो निपट मूर्ख होते हैं उन पर सत्संग का कुछ भी प्रभाव नहीं होता जैसे काले रंग पर अरे राजिया! दूसरा कोई रंग नहीं चढ़ता।

मलिया गिरां मंझार, हर कोतर चंदण हुवे।
संगत लिये सुधार, रूखांइ ने राजिया ॥७३॥

मलयागिरी पहाड़ का प्रत्येक वृक्ष चन्दन हो जाता है हे राजिया! सत्संग वृक्षों को भी सुधार लेता है।

पिंड कुलछ पहचांण, प्रीत हेत कीजै पछै।
जगत कहे सो जांण, रेखा पाहण राजिया ॥७४॥

कुल और कुलक्षणों को पहिचानने के बाद ही किसी से प्रेम-व्यवहार करना चाहिये, हे राजिया! संसार के इस कथन को पत्थर की लकीर जानो।

ऊँचे गिरवर आग, जलती सह देखे जगत।
पर जलती निज पाग, रती न दीसे राजिया ॥७५॥

अरे राजिया! संसार ऊँचे पहाड़ पर की जलती हुई आग को तो देखता है परन्तु अपने सिर की जलती हुई पगड़ी को वह ज़रा भी नहीं देखता।

सीता-पति सब जाण, कांई अत बीनां करो।
मह सीतला मलांण, रासभ दीनौ राजिया ॥७६॥

राम सब बातों को जानता है; दिल में क्या सोचते हो? हे राजिया! सर्वज्ञ होने के कारण ही उसने शीतला देवी को गधे की सवारी दी है।

हित कर जोड़े हाथ, कांमण सूं अनवो किसो।
नमे त्रिलोकी नाथ, राधा आगल राजिया ॥७७॥

ऐसा कौन है जो स्त्री के सामने नहीं झुकता। अरे राजिया! श्री कृष्ण चन्द्र भी राधा के सामने झुकते थे।

जिण विन रयो न जाय, एक घड़ी अलगो हुवां।
दोस करे विण दाय, रीस न कीजै राजिया ॥७८॥

जिसके अलग होने से एक घड़ी भी नहीं रहा जा सके, वह यदि व्यर्थ भी दोषारोपण करे तो हे राजिया! उस पर गुस्सा नहीं लाना चाहिये।

समर सियाल सुभाव, गलियांरां गाहिड़ करै।
इसड़ा तो उमराव, रोटी मुहँगा राजिया ॥७९॥

जो युद्ध के समय तो गीदड़ की तरह भागे और गालियों में अपनी शूरवीरता प्रकट करे हे राजिया! ऐसे उमराव तो रोटियों में भी मँहगे हैं।

कही न मांने काय, जुगती अण जुगती जगत।
स्याणां ने सुख पाय, रहणां चुप हुय राजिया ॥८०॥

जब कोई उचित और अनुचित बात की ओर ध्यान भी न दें तो हे राजिया! बुद्धिमान मनुष्य को चुप होकर ही सुख प्राप्त करना उचित है।

पाटा पीड़ उपाव, तन लागां तरवारियां।
बहै जीभ रा घाव, रती न ओषद राजिया ॥८१॥

हे राजिया! शरीर पर तलवारों के घावों को मल्हम पट्टी करके अच्छा किया जा सकता है, परन्तु वचनां द्वारा लगे घावों की संसार में कोई दवा ही नहीं है।

नहचै रहो निशंक, मत कीजे चल विचल मन।
ऐ विधना रा अंक, राई घटे न राजिया ॥८२॥

हमेशा बिल्कुल अशंक हो कर रहो, अपने मन को विचलित न होने दो, क्योंकि हे राजिया! जो अंक ब्रह्मा ने लिख दिये हैं वे तो एक तिल भर घट-बढ़ नहीं सकते।

सुध हीणा सिरदार, मत हीणा राखे मिनख।
अस आँधो असवार, राम रुखालो राजिया ॥८३॥

मूर्ख सरदार, बुद्धिहीन मनुष्य को अपने पास रखते हैं तो वे वैसे हैं जैसे अंधा मनुष्य घोड़ा पर चढ़ा हुआ, उसका ईश्वर ही बेली (रखवाल) है।

भावे नहींज भात, लागे विणज विडावणां।
रोराव दिन रात, रोट्या बदले राजिया ॥८४॥

ऐसे पुरुष जिन्हें किसी समय भात नहीं भाता और न मीठा भात ही अच्छा लगता था, हे राजिया! वे ही रोटियों के लिए रात दिन गिड़गिड़ाया करते हैं।

कुड़ा निलज कपूत, हिया फूट ढाँढा असल।
इसड़ा पूत अऊत, रॉड जणे क्यूं राजिया ॥८५॥

झूँठे, निर्लज्ज, फूटे हिये के (मूर्ख), बिलकुल ढोर के समान, कपूत और ऊत पुत्र को हे राजिया! स्त्री प्रसव ही क्यों करे? अर्थात् ऐसों का न होना ही अच्छा है।

चाले जठे चलन्त, अण चलिया आवै नहीं।
दुनियां में दरसन्त, रीस सुलोचन राजिया ॥८६॥

अरे राजिया! क्रोध वहीं आता है जहाँ उसका वश चलता हो, अपने से जबर्दस्त के आगे क्रोध भी नहीं आता।

सबलां संपट पाट, करता नह राखे कसर।
निबलां एक निराट, राज तणां बल राजिया ॥८७॥

बलवान मनुष्य बस चलते संहार करने में कुछ उठा नहीं छोड़ते, परन्तु हे राजिया! निर्बलों को तो राज का ही बल होता है।

प्रभुता मेरु प्रमाण, आप रहै रज कण इसां।
जिके पुरस धन जाण, भूमण्डल बिच राजिया ॥८८॥

जिसके पास महान प्रभुता होने पर भी अपने को बहुत ही छोटा समझे, ऐसे पुरुष को हे राजिया ! इस पृथ्वी पर धन्य समझो ।

लावां तीतर लार, हर कोई हाका करै ।
सींहां तणो सिकार, रमणो मुशकल राजिया ॥८९॥

लवा और तीतर नामक पक्षियों के पीछे तो हर कोई मनुष्य हल्ला मचा लेता है, किन्तु अरे राजिया ! सिहों का शिकार करना कठिन काम है ।

मतलब सूं मनवार, नौत जिमावै चूरमा ।
विन मतलब मनवार, राब न पावै राजिया ॥९०॥

कवि राजिया से कहता है कि अरे राजिया ! मतलब हो तो निहोरे करके न्यौता देकर मिष्ठान जिमाते हैं परन्तु बिना मतलब के कोई एक बार राब (छाछ में घोला हुआ आटा) भी नहीं खिलाता ।

मूसा ने मंजार, हित कर बैठा हेकठा ।
सब जाणें संसार, रह नह रहसी राजिया ॥९१॥

चूहे और बिल्ली अत्यन्त प्रेम करके इकट्ठे होकर बैठे हों तो भी हे राजिया ! सब संसार जानता है कि उनमें मेल नहीं रहेगा ।

जिण तिण आगे जांय, दुख अपणों कहजे नहीं ।
काड न दे धन कोय, रीराया सूं राजिया ॥९२॥

हर किसी के सामने अपना दुख रोने नहीं बैठ जाना चाहिये, क्योंकि अरे राजिया! रोने से कोई धन निकाल कर नहीं दे देता।

साम धरम धर साँच, चाकर जिके ही चालसी।
ऊंनी ज्यानें आंच, रती न आवे राजिया ॥६३॥

कवि कहता है कि जो नौकर ईश्वर धर्म और सत्य को धारण करके चलेगा हे राजिया! उसको किसी भी तरह की आँच नहीं आवेगी।

बंध बाँध्या छुड़वाय, कारज मन चिंत्या करै।
कहो चीज़ है काय, रुपया सरखो राजिया ॥६४॥

अरे राजिया! यह बता कि इस जगत में रुपये के समान दूसरी कौनसी वस्तु है, इसके बल क़ैदी बन्धन से मुक्त होते हैं और अनेक मन इच्छित काम पूरे किये जा सकते हैं।

चोर चुगल वाचाल, ज्यांरी मांनीजै नहीं।
सपड़ावै घसकाल, रीती नाड्यां राजिया ॥६५॥

चोर, चुगलख़ोर और बातूनी मनुष्यों की बातों पर कदापि विश्वास नहीं करना चाहिये। क्योंकि हे राजिया! ये लोगों को सूखी तलइयों में स्नान कराते हैं। अर्थात् जहां कुछ न हो वहां सब कुछ बतलाने का प्रयत्न करते हैं।

जणा ही सू जड़ियोह, मद गाढो करि माढवा।
पारस खुल पड़ियोह, रोयां मिलै न राजिया ॥६६॥

जिन महा पुरुषों से पहले प्रीति थी, परन्तु पश्चात् किसी प्रकार से मनमुटाव हो गया तो वह प्रेम पीछा नहीं आने का है,

जैसे पल्ले से पारस खुल कर गिर जाय तो वो रोने से पीछा नहीं मिलता।

खल गुल अण कूताय, हेक भाव कर आदरै।
ते नगरो हूँ ताय, रोही आछी राजिया ॥९७॥

जहां खल और गुड़ एक भाव में बिकता हो, हे राजिया! उस बस्ती से तो ऊजड़ जंगल ही अच्छा है (अर्थात् जहां अच्छे और बुरे एक से हैं)।

औगुण गारा और, दुखदायी सारी दुनी।
चोदू चाकर चोर, रांधे छाती राजिया ॥९८॥

दुर्जन, कायर, चोर और निकम्मे नौकर, हे राजिया! संसार की छाती जलाया करते हैं।

राव रंक धन और, सूरवीर गुणवान सठ।
जात तणो नह जोर, रीत तणों गुण राजिया ॥९९॥

धनी, कंगाल, शूर वीर, गुणी और मूर्ख जाति के लिहाज से नहीं होते हैं बल्कि हे राजिया! गुण और कर्मों के अनुसार होते हैं।

वसुधा बल व्योपाय, जोयो सह कर कर जुगत।
जात स्वभाव न जाय, रोक्या धोक्या राजिया ॥१००॥

हे राजिया! संसार की सब युक्तियां करके देख लिया कि किसी भी तरह रोकने से अथवा समझाने से भी जाति का स्वभाव नहीं जाता।

अरहट कूप तमाम, ऊमर लग न हुवै इती।
जलहर एको जाम, रेले सब जग राजिया ॥१०१॥

हे राजिया ! रहँट और कुए उमर भर भी इतना पानी नहीं उलीचते जितना एक ही पहर में बादल बहा देता है ।

नां नारी नां नांह, अद बिचला दीसे अपत ।
कारज सरे न काय, राँडोला सूं राजिया ॥१०२॥

वे अधबीच के मनुष्य न तो पुरुष ही दिखाई देते हैं और न स्त्री ही, अरे राजिया ! ऐसे हिजड़ों से कोई काम नहीं बनता ।

समहर ने आचार, बेला मन आघो बधै ।
समझे कीरत सार, रंग छै ज्यांने राजिया ॥१०३॥

युद्ध और सदाचार के समय जिनका मन उत्साहित हो, वे सच्ची कीर्ति प्राप्त करते हैं । हे राजिया ! ऐसे पुरुष धन्य हैं ।

विष कसाय खाय अन खाय, मोह पाय अलसाय मति
जनम इख्यारथ जाय, राम भजन बिन राजिया ॥१०४॥

विषय वासनाओं में लगने से अज्ञान, आलस और क्रोध से मति भ्रष्ट हो, जाती है, हे राजिया ! बिना ईश्वर स्मरण के इन बातों में जीवन व्यर्थ चला जाता है ।

क्यों न भजै करतार, साचे मन करणी सहत ।
सारो ही संसार, रचना झूंठी राजिया ॥१०५॥

सच्चे मन और सच्चे कार्यों से परमात्मा को क्यों नहीं याद करता, क्योंकि अरे राजिया ! यह जगत् मिथ्या है ।

घण घण साच बधाय, नह फूटे पाहड़ निवड़ ।
जड़ कोमल भिद जाय पाय गहे जड़ राजिया ॥१०६॥

मज़बूत पहाड़ घनों की जबरदस्त चोटें खाकर भी नहीं फूटता परन्तु हे राजिया ! वृक्ष की कोमल जड़ उसमें दरार कर देती है। अर्थात् अमेल होने पर छोटा सा शत्रु भी बड़ों को मार लेता है।

जगत् करै जिमणार, स्वारथ रै ऊपर सको।
पुनरो फल अणपार, रोटी नह दे राजिया ॥१०७॥

स्वार्थ के लिए संसार जाति भोज आदि ज्योंनारें करता है, परंतु हे राजिया ! पुण्य का उत्तम फल होने पर भी कोई किसी को रोटी का टुकड़ा तक भी नहीं देता है।

धान नहीं ज्यां धूल, जीमण बखत जिमाड़िये।
मांहि अंस नहिं मूल, रजपूती रो राजिया ॥१०८॥

वह अन्न नहीं बल्कि धूल है जो उन लोगों के खिलाने में खर्च किया गया, जिनमें, हे राजिया ! राजपूती का अंश तक नहीं है।

के जहुरी कविराज, नग मांणस परखै नहीं।
काच कृपण बेकाज, रुलिया सेवे राजिया ॥१०९॥

कई जौहरी और कवि जो जवाहरात और श्रेष्ठ मनुष्य को नहीं पहिचान सकते हैं हे राजिया ! वे काँच और कंजूस मनुष्यों को ही अपना सर्वस्व समझते हैं।

आछा हुवे उमराव, हिया फूट ठाकुर हुवे।
जड़िया लोह जड़ाव, रतन न फाबे राजिया ॥११०॥

अमीर तो हों अच्छे और ठाकुर (स्वामी) हों हिये के फूटे तो हे राजिया ! वे लोहे में जड़े हुए रत्नों की तरह वहां शोभा नहीं पाते ।

खाग तणो बल खाय, सिर साटा रो सूरमा ।
ज्यांरो हक रह जाय, गम न माने राजिया ॥१११॥

जो शूरवीर योद्धा तलवार के बल से सिर के बदले भोजन प्राप्त करते हैं, हे राजिया ! यदि उनका हक्क मारा भी जाय तो इस बात का उन्हें कुछ भी रंज नहीं होता ।

समझ हीण सरदार, राजो चित्त क्या सूं रहे ।
भूमि तणां भरतार, रींझे गुण सूं राजिया ॥११२॥

यदि बुद्धि हीन सरदार हों तो अरे राजिया ! राजा का चित्त कैसे प्रसन्न रह सकता है, क्योंकि वह तो गुणों का ग्राहक होता है ।

बचन नृपति अविवेक, सुण छोड़े सैणा मिनख ।
अपत हूवा तरु एक, रहे न पंछी राजिया ॥११३॥

हे राजियां ! विवेकहीन राजा की बातें सुनकर समझदार लोग उसे उसी प्रकार छोड़ देते हैं जैसे पतझड़ होने पर पक्षी उस वृक्ष को ।

स्यालां संगति पाय, करक चंचेड़े केहरी ।
हाय कुसंगत हाय, रोस न आवे राजिया ॥११४॥

गीदड़ों की संगति में पड़कर सिंह भी सूखी हड्डियों को चबाने लगता है और गुस्सा नहीं लाता, हे राजिया ! बुरी संगति ऐसी ही होती है ।

आछोड़ा ढिग आय, यों आछा भैला हुवै।
ज्यूं सागर में जाय, रलै नदी जल राजिया ॥११५॥

सज्जनों के पास सज्जन पुरुष अरे राजिया! इस प्रकार आकर इकट्ठे हो जाते हैं जैसे कि समुद्र में नदियां।

मिलियां अति मनवार, बीछड़ियां भाखै बुरी।
लानत दे जां लार, रजी उड़ावे राजिया ॥११६॥

मिलने पर अत्यन्त शिष्टाचार एवं प्रेम दिखावें और बिछुड़ने पर बुराई करते हैं; अरे राजिया! ऐसे धिक्कारने योग्य पुरुषों के पीछे धूल फेंको।

रोग अगन अरु राड़, जाण अलप कीजे जतन।
वधवां पछै बिगाड़, रोक्यां रहै न राजिया ॥११७॥

बीमारी, आग और लड़ाई को तुच्छ समझ कर बेफिक्र नहीं रहना चाहिये बल्कि दबाने का यत्न करना चाहिये। क्योंकि इनके बढ़ जाने पर अरे राजिया! इन्हें रोकना कठिन है।

उणही ठाम अरोग, भांजण री मन में भणे।
आ तो बात अजोग, राम न भावै राजिया ॥११८॥

जिस बर्तन में खाकर के अपना निर्वाह करता हो और उसी को वह तोड़े, यह अच्छी बात नहीं है। अरे राजिया! यह बात ईश्वर को भी अच्छी नहीं लगती।

देसोता री खाट, बैठे आय बराबरी।
नाई किसब निराट, रछाणी सूं राजिया ॥११९॥

अरे राजिया! इस रछाणी (नाई के औजार रखने को वस्तु विशेष) के प्रताप से नाई को यह सौभाग्य प्राप्त हो जाता है कि वह खाट पर उमरावों के बराबर बैठ जाता है।

गेलो गंडक गुलाम, बुचकार्यां बांथाँ पड़े।
कुटिया देवे काम, रोस न कीजै राजिया ॥१२०॥

पागल मनुष्य कुत्ता और ग़ुलाम ये तीनों मुँह लगाने से सिर पर चढ़ने लगते हैं। इसलिए हे राजिया! इन तीनों को डण्डों से ही ठीक करने पर काम बनता है।

पटियालो, लाहौर, जींद भरतपुर जोयले।
जाटाँ ही में जोर, रिजक प्रमाणे राजिया ॥१२१॥

पटियाला, लाहौर, जींद और भरतपुर इन चारों राज्यों के स्वामी जाट हैं और वे बलवान भी गिने जाते हैं। हे राजिया! राज्यों के प्राप्त होने से ही जाट सबल गिने जाने लगे।

गोली गोरे गात, पर घर दोसे पदमणी।
पतलज सागे पात, रतो न कीजे राजिया ॥१२२॥

सुन्दर रूपवती दासी दूसरे के घर में पद्मिनी के समान दिखाई देती है, उसकी इज्जत नहीं होती है। इसलिए अरे राजिया! उसकी इज्जत नहीं लेनी चाहिये। अर्थात् उसके सम्पर्क में बिलकुल नहीं आना चाहिये।

अरबां खरबां आथ, सुद तारां बिलसे सदा।
सूमा चले न साथ, राई जितरी राजिया ॥१२३॥

दानी मनुष्य अरब-खरब तक द्रव्य हो तो भी उसका उत्तम उपयोग करता है, परंतु अरे राजिया! वही द्रव्य सूमों (कंजूसों-मूंजी) के हाथों हो तो वे उसको खर्च नहीं करते अन्त मे वह उनके साथ राई के बराबर भी नहीं जाता।

दातारां इक दाय, आथ नहीं जो आपरे।
काढ़े ब्याज कराय, रीझ परो दे राजिया ॥१२४॥

दानी मनुष्यों के पास द्रव्य न होने पर भी हे राजिया! उनकी सदा यही आदत रहती है कि ब्याजू ले ले कर भी दान करते रहते हैं।

खीच मुफ़त रो खाय, करडावण डूंकर घणो।
लपर घणो लपराय, (कोई) रांड ऊचकसी राजिया॥१२५॥

कवि कहता है कि जो दूसरों के घर मुफ्त का माल खाती फिरती हो, इतने पर भी नखरा ज्याद: हो और बहुत वाचाल हो, ऐसी स्त्री हे राजिया! निस्सन्देह कहीं न कहीं चली जायगी।

औसर मांहि अकाज, सामो बोल्यां सांपजे।
करणो जे सिध काज, रोस न कीजै राजिया॥१२६॥

कभी कभी मौके पर सामने बोलने से काम बिगड़ जाता है। इसलिए अरे राजिया! यदि अपना काम सुधारना हो तो दूसरे के असह्य बचनों को सुनकर भी उस वक्त क्रोध नहीं करना चाहिये।

गोला घणा नजीक, रजपूतां आदर नहीं।
उण ठाकर री ठीक, रण में पड़सी राजिया॥१२७॥

जो सरदार ग़ुलामों को अपने मुँह बहुत लगाते हैं वे राजपूतों में समस्त आदर-सम्मान को खो बैठते हैं। हे राजिया! जब उनको युद्धक्षेत्र में जाने का काम पड़ेगा तो उनको इसका फल भोगना पड़ेगा अर्थात् युद्ध में ग़ुलाम (चाकर) पीठ दिखा देंगे।

ठाकर ठाला ठोट, ठकराणि गिरवर जिसो।
करै विभै रा कोट, रात्यूं सूता राजिया ॥१२८॥

ठाकुर साहब तो निपट मूर्ख हैं और ठकुरानी जी पत्थर के समान है। हे राजिया! वे दोनों स्त्री पुरुष रातों पड़े हुए मन के लड्डू बनाया करते हैं।

करै न संका कोय, गांव धणी संभड़ गिणे।
रैत बराबर होय, रोल दट्ट में राजिया ॥१२९॥

कोई भी बिलकुल डर नहीं मानता, और गांव के ठाकुर को भी कुछ नहीं गिनते, हे राजिया! उस गांव के लोग उस गांव के स्वामी को बिलकुल तुच्छ गिनते हैं।

बरतै हेत सवाय, कर बंधू राखै कनै।
जो सिर दीजे जाय, रीठ बजाड़े राजिया ॥१३०॥

अरे राजिया! जो किसी को भाई के समान समझ कर अपने पास अत्यन्त प्रेम से रखे; वह मनुष्य समय आने पर निस्सन्देह अपना सिर युद्ध में कटवाने को तय्यार हो जाता है।

सत राख्यो साबूत, सोनगरे जगदे करण।
सारी बातां सूत, रैगो सत सूँ राजिया ॥१३१॥

हे राजिया! सत्य पर अटल रहने से सब कार्य सिद्ध हो गये हैं। सत्य पर रहने से वीरमदेव सोनगरा चौहान, जगदेव परमार और दानी करण ने अपना नाम अमर कर दिया।

खग झड़ बाज्या खेत, जिण पर पग पाछा दियै।
(वा रीं) रजपूती में रेत, रालनचीतो राजिया ॥१३२॥

लड़ाई के मैदान में जब तलवार चलाने का वक्त आवे उस समय जो राजपूत पीछे हटता है, हे राजिया! उसके नाम पर धूल डालो।

रीज्यां देवै न मौज, चूक्यां चट चेतौ करे।
जा ठाकर रो चोज, रती न आवे राजिया ॥१३३॥

जो ठाकुर प्रसन्न होने पर तो कुछ इनाम नहीं देता परन्तु काम के बिगड़ जाने पर नाराज होता है। हे राजिया! ऐसे व्यक्ति के लिए दिल में ज़रा भी स्थान नहीं होता।

जात सुभाव न जाय, राँघड़ बोदो हुवै।
आरण बाज्या आय, रीठ बजाड़े राजिया ॥१३४॥

कवि कहता है कि हे राजिया! रांघड़-राजपूत का यह एक जाति स्वभाव है कि वह निर्बल हो तो भी युद्ध छिड़ते ही मैदान में अपना हाथ दिखाये बिना नहीं रहता।

सत्रू सूँ दिल साफ, सेणासूँ दोखी सदा।
बेटा सारूँ बाप, राछ घस्यां क्यों राजिया ॥१३५॥

जो शत्रुओं से प्रेम करे और मित्रों से द्वेष रखे, हे राजिया! ऐसे बेटे को बाप का जन्म देना ही व्यर्थ है।

घोचो लागां घाव, घी गेहूँ भावै घणा।
अहड़ा तो उमराव, रोट्या मूंगा राजिया ॥१३६॥

खाने के लिए तो जिन्हें घी और गेहूँ चाहिये और मरने से दूर भागते हैं? ऐसे राजपूत (योद्धा) तो रोटियों से भी मँहगे हैं।

माठाड़ां रघ मांय, जे क्रोड़ां संपति जुड़ै।
मौज देण मन माय, रतो न आवे राजिया ॥१३७

कंजूसों के घर चाहे करोड़ों की सम्पत्ति हो तो भी राजिया ! उनको एक कौड़ी तक देने की भी मन में नहीं आती

ऊंच नीच अंतराय, कीरत कीधी किरतवां।
मिनख जमारे मांय, रहे भलाई राजिया ॥१३

जिसने ऊँच नीच का विचार न करके यश प्राप्त कि॰ है, हे राजिया ! ऐसे मनुष्यों की भलाई ही संसार रह जावेगी।

काली घणी कुरूप, कसतूरो काँटा तुलै।
सक्कर बड़ी सुरूप, रोड़ा तूलै राजिया ॥१३९।

कस्तूरी बहुत ही काली होती है, बदसूरत है, किन्तु तोलों माशों से काँटे पर तुलती है और हे राजिया ! शक्कर अत्यन्त सफेद और खूबसूरत होने पर भी तराजू में पत्थरों से तोली जाती है। अर्थात् गुणों से क़ीमत होती है न कि रूप से।

भिड़ियो धर भाराथ, गढा कर राखै गढाँ।
ज्यूं कालो सिर जात, रांक न छाई राजिया ॥१४०

अपने गढ़ों-किलों को मज़बूत करके युद्ध में पृथ्वी के लिए भिड़ना चाहिये। देखो काले नाग के सिर पर कोई जाता है तो हे राजिया ! वह ग़रीबी नहीं दिखलाता बल्कि फण करके सामने हो जाता है।

*** समाप्त ***